चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत

-प्रस्तुति-

गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 497
ISBN-978-93-87891-03-6

चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत

–लेखिका –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

भारतगौरव, दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती, चैत्र कृष्णा नवमी (10 मार्च 2018) के पावन अवसर पर घोषित ''भगवान ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2544	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वैशाख कृ. दूज, 2 अप्रैल 2018	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादकः-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत

अनादिकाल से सभी संसारी प्राणी चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण करते आ रहे हैं। उन चौरासी लाख योनि के परिभ्रमण से छूटने के लिए यह **''चौरासी लाख योनिपरिभ्रमण निवारण व्रत''** है। इस व्रत के करने से व प्रतिदिन इन योनियों के परिभ्रमण से छूटने की भावना करते रहने से अवश्य ही हम और आप इन संसार परिभ्रमण के दुःखों से छुटकारा प्राप्त करेंगे।

इन चौरासी लाख योनियों का विवरण इस प्रकार है – 1. नित्य निगोद, 2. इतरनिगोद, 3. पृथ्वीकायिक, 4. जलकायिक, 5. अग्निकायिक व 6. वायुकायिक – इन एकेन्द्रिय जीवों के प्रत्येक की सात-सात लाख योनियां मानी गयी हैं। अतः 6×7=42 लाख योनियाँ हुई हैं। पुनः वनस्पतिकायिक की दश लाख योनियाँ हैं। पुनः विकलत्रय अर्थात् दो इंन्द्रिय, तीन इन्द्रिय व चार इन्द्रिय जीवों की प्रत्येक की दो-दो लाख योनियाँ हैं। अतः 3×2=6 लाख भेद हुए। पुनः देव, नारकी व पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की चार-चार लाख योनियाँ हैं। ये 3×4=12 लाख हुए। पुनः मनुष्यों की चौदह लाख योनियाँ हैं। इस प्रकार (4200000+1000000+600000+1200000+1400000= 8400000) 84 लाख योनियों के भेद हैं।

व्रत विधि – अपनी शक्ति के अनुसार व्रत में उत्तम विधि उपवास करना है। मध्यम विधि में अल्पाहार, जल, रस, दूध, फल आदि लेकर करना चाहिए तथा जघन्य विधि में दिन में एक बार शुद्ध भोजन करके अर्थात् 'एकाशन' करके भी व्रत किया जा सकता है।

व्रत के दिनों में अर्हंत भगवान की अथवा चौबीसी तीर्थंकरों की प्रतिमा का या किन्हीं एक भी तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करें। पुनः चौबीस तीर्थंकर पूजा या अर्हंत पूजा या चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण पूजा करके जाप्य करें। मंत्र की माला में – 108 मंत्र जाप्य में सुगंधित पुष्प या लवंग या पीले पुष्पों से अथवा जपमाला से भी मंत्र जप

सकते हैं। व्रत के दिन पूजा व मंत्र जाप्य आवश्यक है।

इस व्रत के करने से क्रम-क्रम से संसार के भी उत्तम-उत्तम सुख प्राप्त होंगे पुनः चतुर्गति के दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर नियम से 2-4 आदि भवों में अपनी आत्मा को परमात्मा बनाकर सिद्धशिला को प्राप्त करना है।

लघु व्रत विधि

चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण लघु व्रत में 14 प्रकार से विभाजित चौदह मंत्र दिये गये हैं। इसमें 14 व्रत हैं। इन 14 व्रतों में 14 जाप्य करना है और प्रत्येक व्रतों में समुच्चय मंत्र की जाप्य अवश्य करना है।

-समुच्चय मंत्र-

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

लघु व्रत में 14 व्रत करने में ये 14 मंत्र हैं–

1. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

2. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

3. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

4. ॐ ह्रीं जलकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

5. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

6. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

7. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां दशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

8. ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवानां द्विलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

9. ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवानां द्विलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

10. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवानां द्विलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

11. ॐ ह्रीं देवानां चतुर्लक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

12. ॐ ह्रीं नारकाणां चतुर्लक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

13. ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियतिरश्चां चतुर्लक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

14. ॐ ह्रीं मनुष्याणां चतुर्दशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

बृहत् व्रत विधि

चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण बृहत् व्रत में 84 मंत्र हैं। नित्यनिगोद के सात लाख योनियों के 7 मंत्र हैं, इनके 7 व्रत करना, ऐसे ही इतर निगोद के 7 व्रत एवं पृथ्वी, जल, अग्नि और वायुकायिक के भी 7-7 व्रत करने से 42 व्रत हो जाते हैं। वनस्पतिकायिक के 10 व्रत करने से 10 हुए। दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय व चार इन्द्रिय के 2-2 व्रत करने से 6 व्रत होते हैं। पुनः देव, नारकी व पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के 4-4 व्रत करने से 12 व्रत हुए एवं मनुष्यों की चौदह लाख के 1-1 व्रत से 14 व्रत हुए। इस प्रकार 42+10+6+12+14=84 व्रत हो जाते हैं।

इसमें 84 व्रत हैं अतः 84 जाप्य करना है, प्रत्येक व्रत में समुच्चय जाप्य अवश्य करना है।

-समुच्चय मंत्र-

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

बृहत् व्रत में 84 व्रत करने वालों के लिए ये 84 मंत्र हैं–

(नित्यनिगोद जीवों के 7 लाख योनिपरिभ्रमण निवारण के 7 मंत्र)

1. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

2. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

3. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

4. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

5. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

6. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

7. ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(इतर निगोद जीवों के 7 लाख योनिपरिभ्रमण निवारण व्रत के 7 मंत्र)

8. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

9. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

10. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

11. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

12. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

13. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

14. ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(पृथ्वीकायिक जीवों के 7 लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 7 मंत्र)

15. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

16. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

17. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

18. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

19. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

20. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

21. ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(जलकायिक जीवों के सात लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 7 मंत्र)

22. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

23. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

24. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

25. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

26. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

27. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

28. ॐ ह्रीं अप्कायिकजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(अग्निकायिक जीवों के सात लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 7 मंत्र)

29. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

30. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

31. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

32. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

33. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

34. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

35. ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(वायुकायिक जीवों के सात लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 7 मंत्र)

36. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

37. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

38. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

39. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

40. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

41. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

42. ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(वनस्पतिकायिक जीवों के दस लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 10 मंत्र)

43. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

44. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

45. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

46. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

47. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

48. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

49. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

50. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां अष्टमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

51. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां नवमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

52. ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवानां दशमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(विकलत्रय जीवों के छह लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 6 मंत्र)

53. ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

54. ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

55. ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

56. ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

57. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

58. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(देवों के 4 लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 4 मंत्र)

59. ॐ ह्रीं देवानां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

60. ॐ ह्रीं देवानां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

61. ॐ ह्रीं देवानां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

62. ॐ ह्रीं देवानां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(नारकियों के 4 लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 4 मंत्र)

63. ॐ ह्रीं नारकाणां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

64. ॐ ह्रीं नारकाणां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

65. ॐ ह्रीं नारकाणां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

66. ॐ ह्रीं नारकाणां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के 4 लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 4 मंत्र)

67. ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियतिरश्चां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

68. ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियतिरश्चां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

69. ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियतिरश्चां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

70. ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियतिरश्चां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(मनुष्यों के 14 लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत के 14 मंत्र)

71. ॐ ह्रीं मनुष्याणां प्रथमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

72. ॐ ह्रीं मनुष्याणां द्वितीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

73. ॐ ह्रीं मनुष्याणां तृतीयलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

74. ॐ ह्रीं मनुष्याणां चतुर्थलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

75. ॐ ह्रीं मनुष्याणां पंचमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

76. ॐ ह्रीं मनुष्याणां षष्ठलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

77. ॐ ह्रीं मनुष्याणां सप्तमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

78. ॐ ह्रीं मनुष्याणां अष्टमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

79. ॐ ह्रीं मनुष्याणां नवमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

80. ॐ ह्रीं मनुष्याणां दशमलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

81. ॐ ह्रीं मनुष्याणां एकादशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

82. ॐ ह्रीं मनुष्याणां द्वादशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

83. ॐ ह्रीं मनुष्याणां त्रयोदशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

84. ॐ ह्रीं मनुष्याणां चतुर्दशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः।

चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

-स्थापना-

जिनने मुनि बनकर तप करके, कर्म घातिया नाश किया।
पुनः अघाति कर्म नाश कर, सिद्ध शिला पर वास किया।।
तीन लोक की चौरासीलख, योनी भ्रमण समाप्त किया।
उन भगवन्तों की पूजन का, मैंने भी शुभ भाव किया।।1।।

-दोहा-

आह्वानन स्थापना, कर पूजूँ प्रभु पाद।
अर्हत्प्रभु की धारणा, करूँ हृदय में आज।।2।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकश्रीअर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकश्रीअर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशकश्रीअर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक (शेर छंद)-

गंगा नदी का नीर ले प्रभु पद में चढ़ाऊँ।
मुझ जन्म मरण नष्ट हो अरिहंत प्रभु ध्याऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर युक्त प्रभु के चरण लगाऊँ।
संसार ताप नष्ट हो यह भावना भाऊँ।।

हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान शुभ्र धवल पुंज चढ़ाऊँ।
अक्षय अखंड पद के लिए भावना भाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब पुष्प प्रभु के पद में चढ़ाऊँ।
हो काम व्यथा नष्ट यही भावना भाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य थाल भर प्रभू पूजन में चढ़ाऊँ।
क्षुध रोग हो विनष्ट यही भावना भाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीप जलाकर सुवर्णथाल में लाऊँ।
प्रभु आरती से मन का मोहतिमिर नशाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर दशांग धूप मैं अग्नि में जलाऊँ।
कर्मों को दहन करने की मैं भावना भाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम सेव फल के थाल सजाऊँ।
प्रभु पद में चढ़ा मोक्षफल की भावना भाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदि अष्ट द्रव्य थाल सजाऊँ।
ले अर्घ्य ''चन्दनामती'' प्रभु पद में चढ़ाऊँ।।
हे नाथ! आपके चरण की पूजा रचाऊँ।
चौरासि लाख योनियों का भ्रमण मिटाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

स्वर्ण कलश में नीर ले, कर लूँ शांतिधार।
त्रिभुवन पति की भक्ति से, हो जाऊँ भवपार।।

शान्तये शांतिधारा।

चुन चुन पुष्प गुलाब के, अंजलि में भर लाय।
पुष्पांजलि प्रभुपाद में, करके लहूँ स्वराज्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अर्घावली

(1)

तर्ज-मेरे प्रभू तू मुझको बता....

मेरे प्रभो! मैं अर्घ्य ले, तेरे चरण में आ गया।
भव के भ्रमण से डर के अब, तेरा ही दर मुझे भा गया।।मेरे....।।
कर्मों के संग अनादि से, मैंने भ्रमण बहुत किया।
नित्यनिगोदिया की सात लाख योनि में गया।।
केवल जनम मरण किया, दुख में समय बिता दिया।
भव के भ्रमण से डर के अब, तेरा ही दर मुझे भा गया।।1।।
अब न मिले निगोद की, पर्याय यह है भावना।
दुर्लभ मनुज पर्याय को, सार्थक करूँ यह है कामना।।
चौरासी लाख योनि में, भटकूं न यह मन आ गया।
भव के भ्रमण से डर के अब, तेरा ही दर मुझे भा गया।।2।।

ॐ ह्रीं नित्यनिगोदजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

(2)

तर्ज-मैंने तेरे ही भरोसे भगवान.....

जिनवर तेरे पद में आके मैंने आज, बड़ा ही सुख प्राप्त किया।
अर्घ्य थाल सजाके लाया आज, लगता है दुख समाप्त हुआ।।
इतर निगोद जीव की योनी, सात लाख हैं कहीं गई।
काल अनादी से ना जाने, कितनी बार वे पाई गईं।।
उनमें जाऊँ न मैं अब जिनराज, यही तो मन में ठान लिया।
अर्घ्य थाल सजाके लाया आज, लगता है दुख समाप्त हुआ।।1।।
नित्य निगोद से निकल जीव जब, विकलत्रय में जनम धरे।
त्रस स्थावर में जाता है, उसे ही इतर निगोद कहें।।
इनसे छूट पाऊँ नरपर्याय, पूजन का फल प्राप्त हुआ।
अर्घ्य थाल सजाके लाया आज, लगता है दुख समाप्त हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं इतरनिगोदजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

तर्ज-चल दिया छोड़ घर बार.....

मैं लाकर अर्घ्य का थाल, नमूँ निजभाल, जिनेश्वर ध्याऊँ,
भव भव का भ्रमण मिटाऊँ।।टेक.।।
पृथ्वीकायिक तन मिला कभी।
हैं सात लाख योनी उनकी।।
प्रभु पूजन कर अब वहाँ न जाना चाहूँ,
भव भव का भ्रमण मिटाऊँ।।1।।
संसार में दुःख अनंत सहे।
प्रभु! वे दुख जिह्वा कह न सके।।
जिन भक्ति से अब स्थावर जन्म न पाऊँ,
भव भव का भ्रमण मिटाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

तर्ज-ज्योति से ज्योति.....

जिनवर की पूजा रचाते चलो, भव भव का भ्रमण मिटाते चलो।
शिवपथ के राही बनना है तो, अरिहन्त प्रभु को ध्याते चलो।।टेक.।।
तीन लोक में हम ज्ञानी, नाना योनि में भटक रहे।
काल अनादी से स्थावर, त्रस बन जग में अटक रहे।।
अब इनसे खुद को बचाते चलो, भव भव का भ्रमण मिटाते चलो।।1।।
स्थावर में जलकायिक जीवों की सात लाख योनी हैं।
उनमें जनम ले लेकर हमने, बहुत यातना झेली है।।
भक्ति से वह दुख भुलाते चलो, भव भव का भ्रमण मिटाते चलो।।2।।

ॐ ह्रीं जलकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5)

तर्ज-मैं तो छोड़ चली.....

मेरे अरिहंत प्रभु जिनराज, करूँ मैं भक्ती तेरी।
लाऊँ अर्घ्य बनाके स्वर्णथाल, करूँ मैं भक्ती तेरी।।टेक.।।
भव परिभ्रमण की कहानी है लम्बी, चौरासी लख योनि आवागमन की।
कभी जाना न सुख का राज, करूँ मैं भक्ती तेरी।।मेरे.।।1।।
स्थावरों में अग्निकायिक जीव की, सात लाख योनियाँ मानी उनकी।
उनमें जाऊँ न अब हे नाथ! करूँ मैं भक्ति तेरी।।मेरे.।।2।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

-गीता छंद-

सात लाख योनियाँ वायुकायिक जीवों की मानी हैं।
उनमें मेरे भ्रमण की प्रभुवर, लम्बी बहुत कहानी है।।
श्रीजिनवर को अर्घ्य चढ़ाकर, भव का भ्रमण समाप्त करूँ।
प्रभु भक्ति के द्वारा अब मैं, जिनगुणसम्पति प्राप्त करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवानां सप्तलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

दश लाख योनियाँ वनस्पति-कायिक जीवों की होती हैं।
एकेन्द्रिय पंचस्थावर की, दुखभरी योनि ये होती हैं।।
इनमें अब ना जाऊँ प्रभुवर, इसलिए अर्चना करता हूँ।
मैं घास फूस तृण फल व फूल, नहिं बनूँ प्रार्थना करता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवानां दशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

दो लाख योनियाँ दो इन्द्रिय की, जिन शास्त्रों में कही गईं।
उन सबमें जन्ममरण करते, जीवन की घड़ियाँ निकल गईं।।
अब पुण्य से मानव जन्म मिला, तो इनमें जनम न हो पावे।
अरिहन्त प्रभू की पूजन से, मेरे कर्मारि विनश जावें।।1।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवानां द्विलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9)

त्रय इन्द्रिय के जीवों की भी, दो लाख योनियाँ बतलाईं।
उनमें जाकर दुख पा पाकर, अब पुण्य से नर योनी पाई।।
यह जिनवर से प्रार्थना मेरी, अब इनमें जनम न मैं पाऊँ।
अरिहन्त प्रभू की पूजन से, भव भव का भ्रमण मिटा पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवानां द्विलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10)

विकलत्रय में चउ इन्द्रिय जीव की, योनी हैं दो लाख कहीं।
मैंने भी काल अनादी से, ये सभी योनियाँ ग्रहण करीं।।
हे प्रभुवर! अर्घ्य चढ़ा करके, मैं यही प्रार्थना करता हूँ।
अब जन्म न हो इन तुच्छ योनियों में अभिलाषा करता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवानां द्विलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11)

तर्ज-चन्दन सा वदन.....

पूजन कर लो-वन्दन कर लो-यह स्वर्ण सुहाना अवसर है।
भव भव का भ्रमण मिटाने को, यह जिनभक्ती का अवसर है।।टेक.।।

देवों की चार लाख योनी, कई बार जनम उन सबमें हुआ।
उन दिव्य स्वर्ग के वैभव में, चिरकाल से मैं भ्रमता ही रहा।।
प्रभु पद में अर्घ्य करो अर्पण, यह जिनभक्ती का अवसर है।।पूजन.।।1।।

ॐ ह्रीं देवानां चतुर्लक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12)

-शंभु छंद-

हे नाथ! तुम्हारी पूजन से भव के बंधन खुल जाते हैं।
चौरासी लाख योनियों के परिभ्रमण स्वयं टल जाते हैं।।टेक.।।
सातों नरकों में जाने हेतु चार लाख योनियाँ कहीं।
लाखों बिच्छू डसने से भी ज्यादा उसमें वेदना रही।।
सह लिया बहुत ही अब न सहूँ इसलिए अर्घ्य को चढ़ाते हैं।
हे नाथ! तुम्हारी पूजन से भव के बंधन खुल जाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं नारकाणां चतुर्लक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13)

हे नाथ! तुम्हारी पूजन से, भव के बंधन खुल जाते हैं।
चौरासी लाख योनियों के भ्रमण स्वयं टल जाते हैं।।टेक.।।
पशुबन्धन के दुख देख देख, तिर्यंचगती स्मरण करूँ।
पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों की चउ लख, योनि के दुख स्मरण करूँ।।
इनमें नहिं जाने हेतु प्रभो! अब तुम पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! तुम्हारी पूजन से, भव के बंधन खुल जाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियतिरश्चां चतुर्लक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14)

तर्ज-फिरकी वाली.....

भोले प्राणी, तू सुन जिनवाणी, जगत कल्याणी।
यही तो बस सार है, इन्द्रिय विषयों को समझ ले निस्सार है।।टेक.।।
लक्ष चुरासी योनि में मानुष, योनि चतुर्दश लक्ष कही।
जाने कितनी बार आतमा ने ये योनियाँ ग्रहण करी।।
इस नरतन को सार्थक करना...2, इसका सार समझना,
आठों द्रव्यों का थाल सजाओ, प्रभू को चढ़ाओ, यही तो बस सार है,
इन्द्रिय विषयों को समझ ले निस्सार है।।1।।

ॐ ह्रीं मनुष्याणां चतुर्दशलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

तर्ज-मेरे देश की धरती.....

जिनवर की पूजा-भव्यप्राणियों का भव भ्रमण मिटाए,
जिनवर की पूजा.....जिनवर की पूजा।।टेक.।।
संसारी आत्मा काल अनादी से त्रिलोक में भ्रमता है।
अज्ञान अवस्था के कारण निज आत्मा में नहिं रमता है।
अब आत्मा में कुछ बोध मिला.....हो.....ओ.....
अब आत्मा में कुछ बोध मिला अतएव शरणप्रभु आए,
जिनवर की पूजा.....।।1।।
वह काल चतुर्थ भी व्यर्थ हुआ, जब मेरा नहिं कल्याण हुआ।
यह पंचमकाल भी सार्थ हुआ, जब मुझको आतमज्ञान हुआ।।
''चन्दनामती'' भवभ्रमण निवारण व्रत सब करे कराएं,
जिनवर की पूजा.....जिनवर की पूजा।।2।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः।**

(9, 27 या 108 बार यह मंत्र पढ़कर पुष्प चढ़ावें)

जयमाला

तर्ज-मांगीतुंगी तीर्थ से आमंत्रण आया है.....

भव भव भ्रमण मिटाने को, प्रभू पूजा करना है,
अब जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है।
जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है, अरिहंत प्रभू गुण गाना है।।भव....।।टेक.।।

काल अनादी से प्रभु मैंने, चतुर्गति के दुःख सहे।
नित्य निगोद से लेकर पंचेन्द्रिय मानव तक जनम धरे।।
इस मानव पर्याय से मुक्ती लक्ष्मी वरना है,
अब जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है।।1।।

एकेन्द्रिय निगोद एवं पंचस्थावर में जनम लिया।
बड़े पुण्य से किसी तरह विकलत्रय तन भी ग्रहण किया।।
पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में भी अब जनम न धरना है,
अब जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है।।2।।

मानव तन पा करके भी सम्यग्दर्शन यदि नहीं मिला।
फिर समझो दुर्गति में जाना दुख पाना भी नहीं टला।।
सम्यग्दर्शन संयम से भव दधि को तरना है,
अब जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है।।3।।

हम चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण व्रत समझें।
गणिनी माता ज्ञानमती जी के पद में वन्दन कर लें।।
उनके द्वारा प्रतिपादित इस व्रत को करना है,
अब जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है।।4।।

जल गंधाक्षत पुष्प और चरु दीप धूप फल ले करके।
अष्ट द्रव्य का थाल ''चन्दनामती'' भक्ति से ले करके।।
पद अनर्घ्य के हेतु प्रभु पद अर्पित करना है,
अब जयमाल का अर्घ्य चढ़ाना है।।5।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिपरिभ्रमणविनाशनाय श्री अर्हत्परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा- **चौरासी लख योनि का, हो परिभ्रमण समाप्त।**
श्रीजिनवर की भक्ति से, हो निजात्म पद प्राप्त।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

ऋषभदेव जिनवर का केवलज्ञान कल्याणक आया है।
फाल्गुन कृष्णा एकादशि को मैंने यह शुभ क्षण पाया है।।
श्री वीर संवत् पच्चिस सौ चव्वालिस ग्यारह फरवरि आई।
सन् दो हजार अट्ठारह में यह लघु विधान रच कर लाई।।1।।

श्री गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमति माता की मैं शिष्या हूँ।
गुरु माता द्वारा प्रतिपादित व्रत करो यही मैं शिक्षा दूँ।।
अपने जीवन के चौरासीवें वर्ष प्रवेश में माता ने।
चौरासी लाख योनियों का परिभ्रमण समाप्त करूँ अब मैं।।2।।

ऐसा चिन्तन कर उनने यह व्रत करने का संकल्प किया।
हम सबने भी उनकी पावन प्रेरणा से यह व्रत ग्रहण किया।।
हे भव्यात्माओं! तुम भी चौदह या चौरासी व्रत कर लेना।
अपनी शक्ति अनुसार व्रतों में अनशन आदिक कर लेना।।3।।

चौरासी लाख योनियों से तब शीघ्र मुक्त हो जाओगे।
''चन्दनामती'' भौतिक आध्यात्मिक शक्ति भी पा जाओगे।।
व्रत को करके उद्यापन में यह लघु विधान भी कर लेना।
मानव जीवन को सुखमय कर निज की गुण सम्पति भर लेना।।4।।

दोहा- **दुखमय पंचमकाल में, करो जिनेश्वर भक्ति।**
कर्मों के जंजाल से, पाओ इक दिन मुक्ति।।5।।

चौरासी लाख योनि परिभ्रमण निवारण स्तुति

(मेरी अन्तर्भावना)

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-सन्त साधु बनके बिचरूँ.....

मनुज तन से मोक्ष जाने की घड़ी कब आएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।टेक.।।

जैसे सागर में रतन का एक कण गिर जावे यदि।
खोजने पर भी है दुर्लभ वह भी मिल जावे यदि।।
किन्तु भव सागर में गिर आत्मा नहीं तिर पाएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।1।।

कहते हैं चौरासि लख योनी में काल अनादि से।
जीव भ्रमता रहता है चारों गति पर्याय में।।
एक बस मानुष गति शिव सौख्य को दिलवाएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।2।।

एक इन्द्रिय की बयालिस लाख योनी मानी हैं।
नित्य-इतर निगोद-पृथ्वी-अग्नि-जल और वायु* हैं।।
इनमें जाकर के कभी नहिं देशना मिल पाएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।3।।

वनस्पतिकायिक की भी दस लाख योनि कहीं गईं।
ये सभी मिथ्यात्व बल से योनियाँ मिलती रहीं।।
इनमें ना जाऊँ यदि सम्यक्त्व बुद्धि आएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।4।।

दो व त्रय-चउ इन्द्रिय जीव की योनि दो-दो लाख हैं।
विकलत्रय की कुल मिलाकर योनियाँ छह लाख हैं।।

---

* इन छहों एकेन्द्रियों की सात-सात लाख योनियाँ होती हैं, अतः ७×६=४२ लाख योनि कही है।

इनमें भी नहिं इन्द्रियों की पूर्णता मिल पाएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।5।।

देव-नारकि-पशु की चउ चउ लक्ष मानी योनियाँ।
इन्हीं द्वादशलक्ष योनी में भटकता ही रहा।।
इन सभी में दुख सहन कर भी न बुद्धि आएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।6।।

मनुज की पर्याय चौदह लाख योनि वाली है।
शास्त्रों में चौरासी लख ये योनियाँ सब मानी हैं।।
नष्ट इनको करने की अब युक्ति कब मन आएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।7।।

दो सहस्र सागर-छियानवे कोटि पूर्व से कुछ अधिक।
कहा त्रस पर्याय का उत्कृष्ट काल है भव्यजन।।
फिर मिले एकेन्द्रि तन यदि मुक्ति नहीं मिल पाएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।8।।

एक इन्द्रिय से सुदुर्लभ पाना त्रसपर्याय है।
उससे भी दुर्लभ है पाना मनुष की पर्याय है।।
उसमें सम्यक्दर्श संयम की प्राप्ति कब हो पाएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।9।।

गणिनी माता ज्ञानमति की दिव्यशक्ति देखके।
''चन्दनामति'' उनकी पावन आत्मशक्ति देखके।।
मन में चिंतन आया मुझमें भी शक्ति कब यह आएगी।
हे प्रभो! पर्याय मेरी कब सफल हो पाएगी।।10।।

चतुर्गति भ्रमण निवारण स्तुति

-गणिनी ज्ञानमती

-स्रग्विणी छन्द-

(चाल-नाथ तेरे कभी.....)

देव त्रैलोक्य के पूर्ण चंदा तुम्हें।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे जिनन्दा तुम्हें।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।1।।

मैं निगोदी रहा काल आनन्त्य ना।
एक इन्द्रीय भू अग्नि वायू बना।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।2।।

कं वनस्पत्य हूआ सहा दुःख हा।
सूक्ष्म तनधार जन्मा मरा नाथ! हा।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।3।।

केंचुआ शंख चींटी ततैया हुआ।
जन्म धर धर मुआ जन्म धर धर मुआ।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।4।।

मैं पशू योनि में जो महा दुख सहा।
नाथ! कैसे कहूँ आप जानो हहा।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।5।।

देवयोनी मनुजयोनि में भी दुखी।
नारकी जो हुआ तो दुखी ही दुखी।।

नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।6।।

मैं कहूं क्या प्रभो आप हो केवली।
मोह शत्रू मुझे ये भ्रमावे बली।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।7।।

मोह को नाश मैं आपके पास में ।
नाथ आना चहूँ है यही आस में।।
नाथ! मेरी हरो जन्म व्याधी व्यथा।
मैं सुनाऊँ तुम्हें संसरण की कथा।।8।।

-दोहा-

लाख चौरासी योनि में, भ्रमा अनंतों काल।
'ज्ञानमती' कैवल्य हितु, नमूँ नमूँ त्रयकाल।।9।।

-विश्वशांति मंत्र-

ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्री ऋषभदेवाय नमः

-प्रकाशन सौजन्य-

''चौरासी लाख योनिपरिभ्रमण निवारण व्रत'' पुस्तक के प्रकाशन में कुमुदनी जैन ध.प. स्व. श्री प्रकाशचंद जैन, कानपुर (उ.प्र.) निवासी जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर प्रवासी ने अपने ''चैत्यभक्ति व्रत'' के उद्यापन उपलक्ष्य में आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ संस्थान उनका आभारी है।

-सम्पादक